श्री वैष्णव विद्यापीठ विवि की नई पहल फाइन आर्ट्स कार्यशाला 'विश्वांकन'

इंदौर| श्री वैष्णव विद्यापीठ विवि द्वारा फाइन आर्ट्स कार्यशाला 'विश्वांकन'का उद्घाटन समारोह सोमवार को हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात कलाकार श्रेणिक जैन, विशेष अतिथि श्रीमती मीरा गुप्ता थे। इनके साथ ही अवधेश यादव, श्रीमती शुभा वैद्य, श्रीमती अनुपमा जैन, शंकर शिंदे, रमेश खैर, आलोक शर्मा, मधु शर्मा और राजेश पाटिल विशेष तौर पर उपस्थित थे। स्वागत भाषण में डॉ.संतोष धर ने बताया कि आज के आधुनिक युग में विद्यार्थियों को सीखने के लिए नई तकनीकी व सुविधाएं हैं। कला के क्षेत्र में कलाकार अपने अलग अनुभवों द्वारा नई कालकृति का निर्माण करता है। फाइन आर्ट्स द्वारा मानवीय कल्पना और रचनाओं की खूबसूरती निखर कर आती है। श्रेणिक जैन ने कहा कि कलाकारों को अपनी निजी शैली बनाना चाहिए। उद्घाटन समारोह का मुख्य आकर्षण श्रेणिक जैन की लाइव पेंटिंग रही। इसके बाद सभी अतिथियों ने लाइव पेंटिंग का डेमो दिया। कुलपति डॉ.उपिंदर धर ने बताया कि यह कार्यशाला श्री वैष्णव इंस्टीट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स की एक पहल है, जो कला के क्षेत्र को समझने के लिए नए कलाकार को एक मंच प्रदान करेगा।

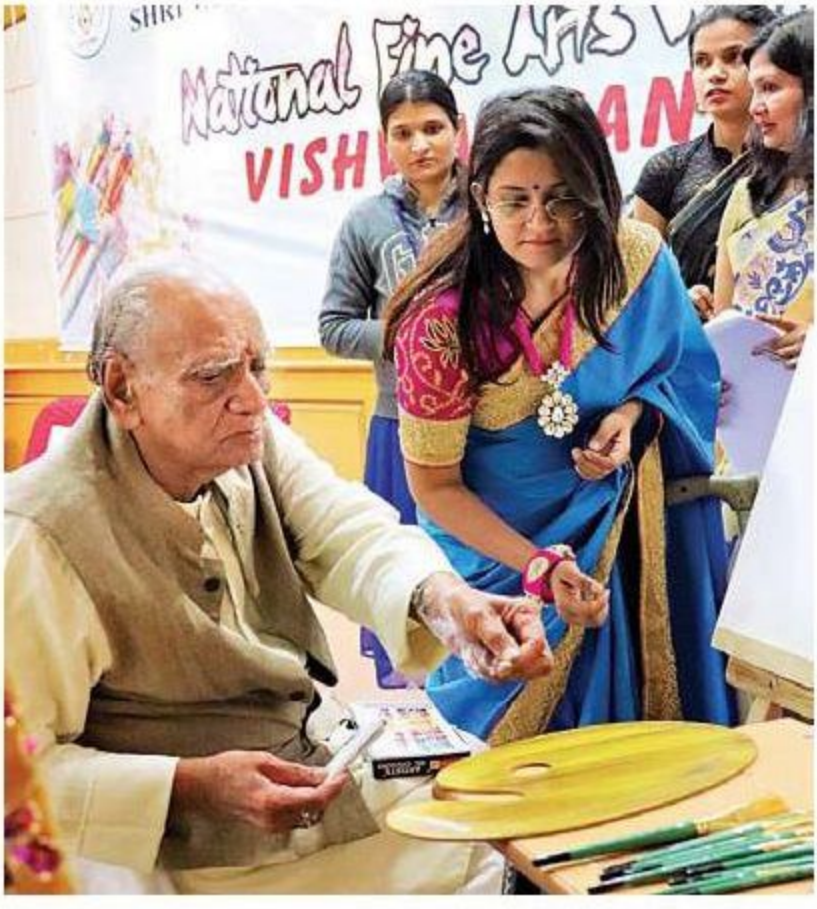

रिसर्च पर ध्यान नहीं देने से यूनिवर्सिटीज पिछड़ी

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

डीएवीवी में 'उच्च शिक्षा में परीक्षा प्रणाली में सुधार' विषय पर कार्यशाला

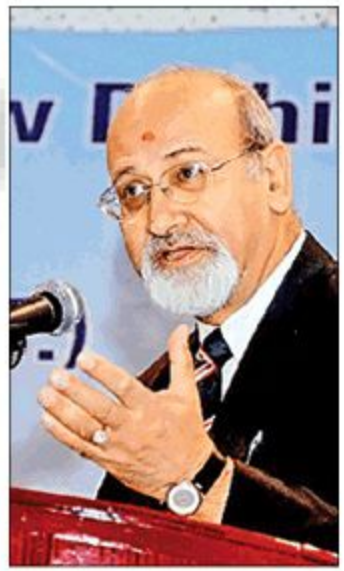

बेहतर शिक्षा प्रणाली के लिए जरूरी है कि एक विश्वविद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता के लिए जो प्रयास कर रहा है, उसके बारे में वह अन्य विश्वविद्यालयों को भी बताए। अपने प्रयास, सफलता, असफलता और तकनीकों को साझा करने से हम क्वालिटी एजुकेशन द ` सकेंगे। आज जरूरत शोध करने वाले विद्यार्थियों को उत्साहित करने और रिसर्च मैथेडोलॉजी प्रोग्राम व शोधकर्ताओं पर ध्यान देने की है। वह वक्त बीत गया, जब केवल परीक्षा से ही बेहतर कल की संतुष्टि हो जाया करती थी। आज रिसर्च, एक्टिविटी और टेक्नोलॉजी पर ध्यान देना जरूरी है। यह बात भारतीय विश्वविद्यालय संघ के उपनिदेशक एवं रिसर्च इंचार्ज डॉ. अमरेंद्र पाणी ने देवी अहिल्या विवि में आयोजित तीन दिनी राष्ट्रीय कार्यशाला के प्रारंभिक सत्र में कही।

डीएवीवी के प्रबंध अध्ययन संस्थान (आईएमएस) में सोमवार से भारतीय विश्वविद्यालय संघ और डीएवीवी द्वारा 'उच्च शिक्षा में परीक्षा प्रणाली में सुधार' विषय पर तीन दिनी राष्ट्रीय कार्यशाला आरंभ हुई। मॉडल इवैल्यूएशन सिस्टम पर केस स्टडी, फिजीबिलिटी ऑफ ऑन डिमांड एजुकेशन सिस्टम, आंतरिक एवं बाह्य मूल्यांकन की तुलना एवं उच्च शिक्षा में सतत् एवं समग्र मूल्यांकन जैसे मुद्दों को लेकर आयोजित हो रही इस कार्यशाला में डॉ. पाणी ने कहा कि वर्तमान में विद्यार्थी तकनीकी मदद लेकर अध्ययन करते हैं, इसलिए वे संबंधित विषयों के बारे में जानते हैं और सवाल भी करते हैं। ऐसे में केवल उन्हें किताबी शिक्षा नहीं दी जा सकती। इसलिए आज शिक्षक भी 'टेक्नो पेडागॉजर' हो गए हैं और यही सही भी है। शिक्षा प्रणाली ऐसी होना चाहिए जिसमें लचीलापन हो। यह लचीलापन विषय चुनने, परीक्षा से संबंधित बातों में भी लागू होना चाहिए।

0.4 प्रतिशत विद्यार्थी ही करते हैं शोध

कार्यशाला के प्रमुख अतिथि श्री वैष्णव विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो.उपेंद्र धर ने कहा कि भारतीय विश्वविद्यालय इसलिए दुनिया के अन्य यूनिवर्सिटीज से पीछे हैं, क्योंकि यहां रिसर्च पर जोर नहीं दिया जाता। भारत में 864 यूनिवर्सिटी हैं। इनमें से लगभग 300 निजी हैं और 48 हजार महाविद्यालय हैं। इन महाविद्यालयों में से आधे संस्थान ऐसे हैं, जो स्नातकोत्तर डिग्री हेतु शिक्षा देते हैं। पर विडंबना यह है कि 0.4 प्रतिशत ही पीएचडी कार्यक्रम में शामिल होते हैं। ऐसे में हम आगे कैसे रह सकेंगे। शिक्षा के विकास के लिए एफिलेशन सिस्टम बंद करके आटोनॉमस सिस्टम लागू किया जाना चाहिए। एक ही यूनिवर्सिटी पर कई महाविद्यालयों की जिम्मेदारी होने से ठीक ढंग से कार्य नहीं हो पाता।

यदि आटोनॉमस सिस्टम होगा तो प्राध्यापकों को बेहतर करिकुलम के लिए पर्याप्त वक्त मिलेगा। इसके अलावा जो महाविद्यालय बेहतर कार्य करें उन्हें आपस में जोड़कर एक विश्वविद्यालय बना दिया जाना चाहिए। जहां तक विद्यार्थियों की योग्यता के मूल्यांकन की बात है तो पारंपरिक परीक्षा के अलावा भी इसका विकल्प होना चाहिए। देवी अहिल्या विवि के कुलपति डॉ. नरेंद्र धाकड़ व प्रो. वीरा गुप्ता ने भी कार्यशाला में विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कपिल शर्मा ने किया और आभार डॉ. विवेक शर्मा ने माना।

हर कला के लिए है अलग तरीके के रियाज की जरूरत

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

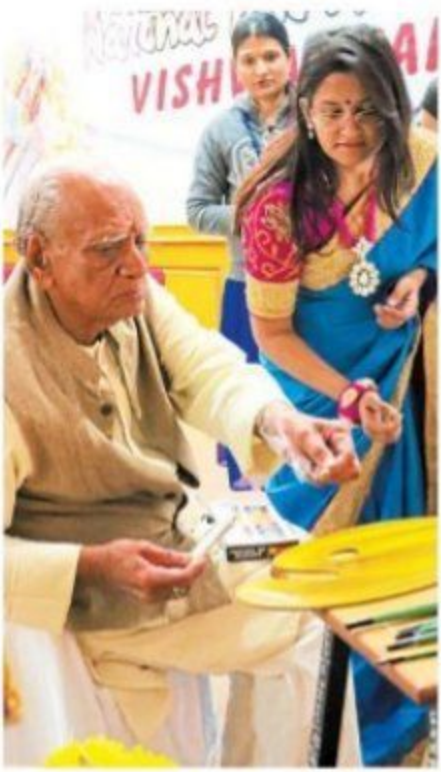

इंदौर ● एक कलाकार को अपनी निजी शैली बनाना चाहिए। एक जैसी पेंटिंग बनाने से हम खुद को पहचान नहीं पाएंगे। हर कला के लिए अलग तरीके के रियाज की जरूरत है। यह कहना है श्रेणिक जैन का। वे सोमवार को श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय द्वारा फाइन आर्ट्स कार्यशाला 'विश्वांकन' के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। इसके साथ वर्तमान समय पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि कलाकार को भले ही लंबे वक्त के बाद पहचान और प्रोत्साहन मिले, लेकिन उसे अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ करते रहना चाहिए। कलाकार किसी को खुश करने के लिए नहीं बल्कि खुद को सुकून पहुंचाने के लिए पेंटिंग बनाता है। इस मौके चित्रकार अनुपमा जैन, शंकर शिंदे, रमेश खेर, आलोक वर्मा, मधु शर्मा, राजेश पाटिल उपस्थित थे। डॉ. संतोष धर ने कहा कि आज के आधुनिक युग में विद्यार्थियों को सीखने के लिए नई टेक्नोलॉजी व सुविधा है। कला के क्षेत्र में कलाकार अपने अनुभव द्वारा नई कलाकृतियों का निर्माण कर सकता है। मीरा गुप्ता ने कहा कि अध्ययन करने से पहले संस्थान की जड़ों को समझना चाहिए और जो भी कार्य करो उसे पूरे मन से करना चाहिए।

रटने पर ज़ोर देता है मौजूदा सिस्टम

प्रो. उपेन्द्र धर, (कुलपति, वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय) ने बताया कि भारत में अब तक 864 विश्वविद्यालय हैं और इनमें लगभग 300 निजी हैं। लगभग 48 हजार महाविद्यालय हैं और इनमें आधे से कम स्नातकोत्तर डिग्री हेतु शिक्षा प्रदान करवाते हैं। इन पाठ्यक्रमों में शामिल होने वाले समस्त विद्यार्थियों में से 0.4 प्रतिशत ही पीएचडी पाठ्यक्रम में शामिल होते हैं। इसकी वजह यही है कि हमारी शिक्षा प्रणाली प्रैक्टिकल पर ध्यान ही नहीं दे रही है। हमारा उद्देश्य बस डिग्री बांटना हो गया है। ऐसे में देश का युवा नौकरी के लिए भटकने पर मजबूर हो रहा है।